

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

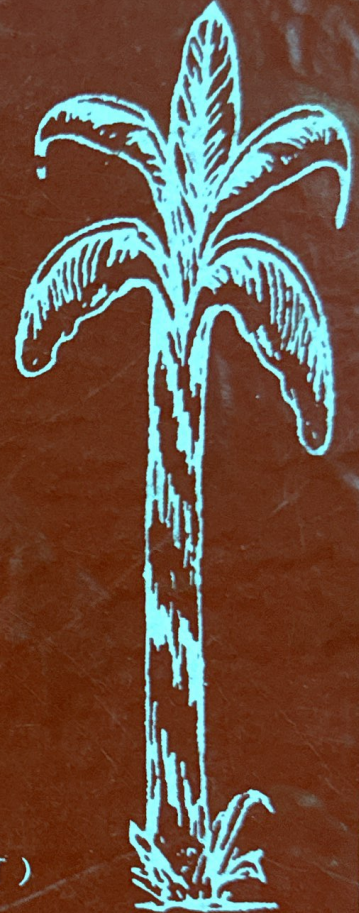
॥ श्री रमणेशो जयति ॥

श्री कल्लोल जी ग्रन्थ

त्रयोदश,

दश

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)



--: मूल :-

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

--: टीकाकार :-

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)

लैया वासी

श्री महाद्वयोत्सव संवत् 2059

कल्लोलजी तेरहवां

श्री कल्लोलजी त्रयोदश

भूमिका संक्षेप

(श्री पंडित लोकनाथजी कृत)

श्री गोकुलाखिलात्म जयति ॥

श्री महदवरः श्री रमणलालो विजयते ॥

निष्ठुष शृंगार रसरूप श्रीमद् गोकुलेश प्रभुन के उत्तरार्ध विरहाग्नि रूप स्थायी भावात्मक महद भक्तवर श्री श्री रमणलाल जी महाराज जी है जो महाउदार उछलित करुणासागर हैं । जे अपने श्री गुरुजी सर्वस्वरूप हैं । आपने अपनी महाउदार करुणाभरी कृपा सो अपने प्रमेय बल सो ही महादीन अधम अयोग्य तुच्छ जीव मोकूं जा प्रकार सुं अनुभवदान पूर्वक खेंचकें अपनायो है कि जैसे मेरे परिवार को हुं अनुभव दिखाय के वैसे अपनायो है ॥ तथा जैसे जैसे सदा प्रथम अनुभव दान देके ही वैसे जो जो मो पर कृपा दान रस हर्ष आनन्द परमानन्द की वर्षा करी है वे तो अनिर्वचीय है सो कहां लो कहे सके ॥ वामें कछु-कछु कहूं हुं मैंने लिख्यो हु है । एक-एक प्रसंग लिखवे में तो बड़े-बड़े ग्रंथ बने सो को कहे सके ॥ वामें हुं आपने महाउदार करुणा सो प्रथम रात्रि में वैसो अनुभव दिखायके वैसे ही खेंचके बुलाय के महारसमय फल दाता श्री गुरुजी ने अपने जो महारस क्षीरोदधी माहाप्रभुन के महारसात्मक श्री कल्लोलजी को जो दान कियो सो तो महा अनिर्वचनीय है ॥ तामें हु जो आपने वाके भाषांतर करवे रूप योग्यता दानपूर्वक महा रसास्वाद दान दियो है सो तो कहा कहु को कहे सके केवल आपकी महाकृपा कि महा उदार शिरोमणी है तामेहू भाषांतर कर कराय के आपने बड़े हर्ष सो जो अंगीकार कियो कि सुन्यो, सुनायो, हृदय में राख्यो कि हर्ष कृपा के महा उछलन बल सो महाउदार करुणा सो जो जो हर्ष रस कृपा रसादि दान कियो सो कासू का का कह्यो जाय ॥ जे अब लोहू मेरे चारों ओर उछले है कि उछलित हुं रहेंगे ॥ तामें तृष्णा, अभिलाषा, ताप के विशेषार्थ कि अपने भाग्य की पूर्णता सो कितनो एक भाग्य की कछुक कल्लोल जी दर्शन नहीं

दियो ॥ कि अपूर्ण हतो सो तो वैसे ही रह गयो ॥ बहुत बेर विनय करी
 "मैं तो अबहु करुं हुं ।" परम दयाल श्री गुरुजी हुं बहुत बेर पूर्ण करायवे
 की इच्छा आज्ञा हुं करी पीछे पत्र में हुं सूचना करी कि "कितनो घटे है,
 तू आ तो उपाय करें" ॥ पर मेरे ही अब मंद भाग्यन सो जानो न भयो सो
 रहे ही गयो ॥ परंतु अब हुं आशा है कि कृपा आपकी परम उदार है ॥
 मेरी आशा को बनाय राख्यो है तो पूर्ण हुं करेंगे ही पुर्णमेतदभि ॥ सो मोकु
 कल्लोल जी मामाजी द्वारा तथा संवत १९८९ में गुजरात में खेंचके पोते ले
 जायके मरुच में मगनलाल द्वारा १०-११ दिवाय दियो है ॥ १५ कल्लोलजी
 है ॥ प्रथम सो लेके १-२-३-४-५-६-८-९-१२-१४-१५ इनको भाषांतर भयो है ।
 शेष को नहीं भयो है । तामें हुं १३ कल्लोलजी अपूर्ण है । अबतो राज ने
 कृपा कर उछवलाल द्वारा पूर्ण कराय दियो है ॥ तापर भाषांतर तो प्रथम
 तो श्री गुरुजी ने आज्ञा नहीं करी हती और निरावरण रसात्मकता देख मेरो
 हुं विचार हतो कि याकूं भाषांतर तो विचार के करेंगे, तामें प्रकार हुं एसो
 ही बनतो आयो ॥ श्री गुरुजी ने और और जे आज्ञा करी वे करायी फिर
 अवकाश में १५ (पंद्रहमे) कल्लोलजी के भाषांतर की आज्ञा दीनी, बीच में
 नाममाला को संस्कृत भाषा बड़ो भाष्य करायो अंगीकार हुं कर लियो मनोरथ
 तो एसो हतो कि श्रीजी के आगे वंचे -- "हम वांचे कि तु वांचे सो तो सोना
 में सुगंध" यह तो इच्छा सो रह्यो ॥ बीच में श्री प्राण प्रभुन को "बसंत विलास"
 ४२ (बयालीस) दिन को खेल आज्ञा करी संस्कृत में ४२ तरंग ॥ बसंत पंचमी
 से द्वितीया पाट लों प्रतिदिन को विलास भयो ॥ सो सुन्यो नहीं ॥ मनोरथ
 ही रह्यो ऐसे प्रकार सो १३ (तेरहवां) कल्लोलजी को भाषांतर नहीं बन
 सक्यो ॥ इतने में श्री गुरुजी तो श्री प्राणनाथजी के विशेष आग्रह सुं आधुनिक
 जीवन के भाग्यन की मंदता को सूचन करत ही आपके निकट पधारे आसुर
 व्यामोह परोक्ष दिखायो ॥ तासुं अवतो कलियुग को बल बढ़ गयो है -- अन्य
 जीवन की बुद्धि की योग्यता में कहा जाये -- अपनो ही प्रकार एसो है कि
 -- लौकिक में पच रह्यो है -- वो लोकनाथ तेरा -- जाको श्री मुखसो कहते
 यह अनन्य दास मेरा -- ऐसे प्रतिदिन बढ़ रह्यो प्रकार है -- सत्य ही है-
 अब तो भाषांतर कैसे बने -- श्री गुरुजी ने अनुभव में आज्ञा हुं करी - मैंने
 आपके दर्शनावसर में पूछ्यो कि अब का करुं -- "आज्ञा करी कि इहां रहे

कि लिखो कि न लिखो तेरी इच्छा" यह आज्ञा करी ॥ समझ में नहीं आयो कि अब ऐसे समय में अहो किनके लिये लिखे -- कोन को सुनावे -- वो आनंद योग्यता रस कहाँ ॥ तोहूँ अबतो कोई महाभाग्यवारे जीव के प्रबल भाग्य कि विनके परवश श्री गुरुजी की आपकी महाउदार सो उछलित कृपा कि वा कृपा भरी इच्छा -- कि वैसे स्वयं आपही अपने कृपापात्र प्यारे खिलोना षंडदेव की मोपर तो परम उपकार करवे वाले जीवन प्राण प्रभु के दिवावने वारे बड़े उपकारी कृपा स्नेह तन मन धन सो करवे वारे सर्वस्व दाता महान दयालु विचित्र रस हर्ष के बढ़ायवे वारे सदा संग बड़भागी वियोग रस पुष्ट विकल महात्मा ऐसे बाबुलाल के अंतःकरण में विराजमान होयके वाके द्वारा बड़ो ही आग्रह पूर्वक बारंबार -- प्रार्थना प्रेम विनय कोप हर्ष दीनता बल विवेक विचार वैराग्य निरोध प्रबोध खेंचातानी के अनेक प्रकारकर मौंसु भाषांतर की प्रतिज्ञा कराय लीनी है ॥ और अब या १३ (तेरहवां) कल्लोलजी के हुं भाषांतर में प्रारंभ अर्थ प्रवृत्त तो कियो है -- सो आपकी अब कोई महाभाग्य भरे स्वजन अर्थ इच्छा ही ऐसी है ॥ तो मैं आपको हूँ, सो आपकी महाउदार सो करुणा ही या कार्य को समग्र करावे तो होय नहीं तो कठिन है ॥ यासुं वारंवार आपको मोपर सदा कृपालु, वा महोदार कृपा के आगे ही प्रणाम करूँ हुं ॥ तथा यामे डरपु हुं -- तासुं कछुक विनय अवश्य देखनी पीछे याको पढ़नो ॥ सो तो यह है कि यदि श्री गुरुजी की कृपा सो जाको या आधुनिक प्रागट्य लोक वेदातीत महारसमय शुद्ध पुष्ट पुरुषोत्तम महाअछूते महा निर्दोष पूर्ण गुण विग्रह निष्ठुष श्रृंगार रसात्म श्री गोकुलनाथ प्रभुन के कि आपके वैसे महारसमय लोकवेदातीत निर्दोष पूर्ण गुण विग्रह अछूते शुद्ध पुष्ट रसमय महद भक्तन के स्वरूप को एसो ज्ञानरूप शुभ भाग्य प्राप्त भयो होय स तो याकू "निरखो" और जाकू यह शुभ भाग्य नहीं मिल्यो होय सो भलो वैष्णव हुं होय पर याकू तो भूलके हुं नहीं देखे ॥ ईच्छा होय तो ऐसे भाग्यन की प्राप्ति अर्थ प्रार्थना करे -- जासुं याके "दर्शन की योग्यता मिले" ॥ ईति श्री गोकुलेश रसाब्धी विजयते ॥

श्री गोकुल रसाब्धी विजयते ॥१॥ नत्वा श्री रमणाधीशान्गोकुलेश भजदशन गुरुस्तदधियं श्रीमद् गोकुलेश रसोदधि ॥१॥ तद्भक्तां श्वारुभावांश्च तेषामेव कृपाश्रयत् -- त्रयोदशे च कल्लोले भाषाख्यानं करोम्यहं ॥२॥ करुणा रमणेशा-

नामहोदार तरा ध्रुवं -- निरर्गल रसाब्धौ या प्रवेशयति मामपि ॥३॥

निरावरण निष्ठुष शृंगार रसरूप श्रीमद् गोकुलाधीश प्रभुन के महा कृपापात्र परम अंतरंग तादृश अनन्य महद भक्तवर श्री कल्याण भट्ट जी अपने प्राणनाथ रससार समुच्चय श्री गोकुल प्राणनायक वर के निरावरण रस विलासरूप त्रयोदशमो कल्लोल जी प्रगट कीयो है ॥ तापर अपने जीवन सर्वस्व गुरु श्री रमणलाल जी महाराज की आज्ञा कृपा प्रेरणा सो भाषानुवाद करु हूं ॥ तामें राज ही कृपा करे जासुं यह मनोरथ पूर्ण होय जाय ॥ ता त्रयोदशम कल्लोल जी के आदि में मंगलरूप अक्षर-अक्षर के अंश अंश में ही निरावरण रसात्मक प्राणनाथ तथा आपके रसभक्त विनको महामंगल विलास सु भयो महामंगल रूप यह श्लोक पर है -- कि

॥ कल्लोल जी त्रयोदशः ॥१३॥

॥ तरंग -- १५॥

अथ प्रसंगदहमाश्वरे शितुः श्री गोकुल प्राणपतेः कृपाबुधेः आनंत माधुर्य तरंगीणः प्रवचिकोचिद्रस विक्रम प्रमाम् ॥१॥

श्री कल्याण भट्ट जी आज्ञा करे है कि -- अब हूं प्रसंगवश सुं अनेक माधुरी के तरंग रंगन सुं कृपा के सागर ईश्वरेश्वर श्री गोकुल प्राण प्रभुन के कोई अनिर्वचनीय रसमय स्वरूप के पराक्रम की प्रभा को कांति के प्रकाश के पसरवे को कछुक वर्णन करु हूं ॥ कबहु चार घड़ी रात्रि रही है तब श्रीमद् गोकुल में परात्पर सर्वातीत पुरुषोत्तमोत्तम श्री प्राणनाथजी स्नान विधी करके होम घरसुं विलास पूर्वक वेगसुं पधारे हैं तामे ॥१॥ गोपालिया नाम भक्त के हाथ में दंड दीप विराजमान है -- आगे मार्ग को प्रकाश कर रह्यो है ॥ महासुंदर कोमल शोभा भरे चरण कमलन को भूमि पर धारण करे हैं ॥ तासुं भूमि हूं रोमहर्ष वारी होय रही है ऐसे वा भूमि को बड़भागिन ही बनाय रहे है ॥ सगरे श्रेष्ठजन आपके पीछे चल रहे हैं ॥ वा भक्त जनन के मुख कमल सो उदय होय रहे जय जयकार के जे शब्दरूप अमृत है वे तो प्राणनाथ के कानरूप पल्लवन को बारंबार सींचन कर रहे हैं तामें कमल नयना ब्रज सुंदरीन के समूह हूं राज के श्री अंग संबंधी माधुरी समूह को विलास पूर्वक

पान कर रही है ॥ तामें सर्वोपर महेश्वर ईश्वरन के हुं महाईश्वर गुणसागर श्री प्राणनाथ जी अपने श्री मुखारबिंद के प्रसाद की प्रसन्नतासुं कि रस सुं भीज रहे दोनों - यन्नसुं की मंद मुस्कान के विलासन सुं की उज्ज्वल अमृत के समुद्रन की शोभा को बरसाय रही वा मनोहर गति सुं कि अलौकिक स्वरूप माधुरी सुं भरे कोऊ अनिर्वचनीय शृंगार नाम रसके सार सागर के निमर्याद तरंगन सुं हुं या सगरे भक्त कि भक्त सुंदरीन में कोई अलौकिक सुन्दर शीतलता की वर्षा कों करत ही जबर सुं ही विना यत्न वा सबन के मन को हरके ही श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे है ॥७॥ या समय में भक्तन में जो उत्तम है कि भाग्यवतीन की जो शिरोमणी है, कि सदैव ही जो प्राणनाथ के स्वरूप में ही परायण है कि वा प्रियवर के श्रीमुख चंद्रमा को पान ही जाको जीवनरूप है कि निरंतर वा प्रिय के गुणगान में ही जो तत्पर है ॥८॥ कि जाके कान तो वा प्राणप्रीय के वार्तारस के सुनवे सुं ही जीवे हैं, कि वा प्रिय के ही भक्त जाकुं अत्यन्त प्यारे लगे है तथा प्राण प्रभुन को अत्यंत प्यारो कि आपने ही दान कियो जो लोकातीत सर्वातीत सर्वोत्तम शृंगार रस है जो आपने ही अपनी कृपा सुं ही अत्यंत ही बढ़ायो है कि पल्लव वारो कियो है कि प्रफुल्लित कियो है कि अद्भुत फलित हुं कियो है सो वैसे- वैसे रससागर श्री प्राणनाथ ने अत्यंत परिपूर्ण बढ़ायो जो वैसे सब प्रकार सुं निर्दोष सुंदर मनोहर सो शृंगार रस है वामे ही जो अत्यंत ही सदा निमग्न रहे हैं, ऐसी जो सबन में प्रसिद्ध श्री वीरबाई जी है जो प्राणनाथ के सुख देवे वारे चतुरता की मधुरता पवित्रता आदि अनेक मनोहर गुणन सो शोभायमान है ॥ कि जे जे महद भक्तवर हुं श्री प्राणनाथ जी को अत्यंत अलौकिक कृपारूप अमृत की सदा चाहना करे है वे वे महद भक्तवर हु सदा निरंतर ही जा वीरबाई जी के चरण कमल संबंधी रज के किणकान की ही सेवा करे है कि जो वीरबाई जी अपने कृपा दृष्टिरूप अमृत के समुद्र की लहरीन सुं कि अपने आलाप रूप पारसमणि के समुहन सुं कि अपने प्रसादन रूप कल्पवृक्ष के अंकुरन सुं भक्त मंडली को अत्यंत ही कृतार्थ करे है कि अपने चरण कमल के पखारवे के जल बूंदन सुं कि अपने चरणामृत के किणकान सुं कि अपने भोजन थार संबंधी महारस भरे किणकान सुं कि अपने चरण कमल की पराग संबंधी कि चरणरज संबंधी वैसे और हुं वा वा वस्त्रन सुं तथा अपने

श्रवण सुं कि दशान सुं कि स्मरण सुं कि सेवा सुं कि प्रणाम सुं कि अपने नाम के कीर्तन सुं हुं सगरे हुं भाग्यवान भक्तन में निर्दोष की सगरे गुणन सु शोभायमान कि शुद्ध रससागर सर्वोपर विराजमान कि सर्व मंगलरूप अपने अत्यंत प्यारे परम पुरुषोत्तमोत्तम श्री गोकुलेश प्रभुन में निर्मल मनोहर सुंदर रसभरी अनन्यता सुं शोभायमान सुंदर भक्ति के समुद्रन को अत्यंत वर्षा करे है ऐसी सो वीरबाई जी जब महाप्रभुन के सगरे भक्त अपने-अपने घरन कुं चले गये है तब अपने मिलाप वारे भक्तन के संग ही सदा श्रेष्ठ बुद्धि वारे प्रसिद्ध वा देवजी भाई भक्तवर के घर में ही पधारी है ॥ वहाँ अत्यन्त ही एकांत में बैठ के श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं के वहाँ श्री प्राणनाथ जी के श्री मुखारबिंद सुं प्रगट भयी वा वा मनोहर रसभरी मधुर अनेक वार्ता में वर्णन करुं हुं सो श्री वीरबाई जी सुनके रही है ॥ तामें सगरे गुण समुहन सुं अत्यन्त गुरुरूप सुन्दर भुवारी सो भाग्यवती वीरबाई जी तब प्राणनाथ को स्वरूप है मुख्य आलंबन कि आधार जाकुं कि प्राणनाथ जी के स्वरूपात्मक अत्यन्त सुन्दर कोऊ अनिर्वचनीय शृंगार रस के सार सर्वस्वरूप समुद्र में ही निरंतर निमग्न होय गयी है -- तासुं वाहिर को अनुसंधान हुं नहीं रह्यो है ॥ अत्यन्त जड़रूप ही होय गयी है ॥ अहो या भाग्यवती की जो यह वैसी लोकातीत महामधुर दशा है जो पसर रहे अलौकिक महा आनंद सुं जो भरी है कि स्तंभ स्वेद (पसीना) कंप आनंद के अश्रुन सुं जो शोभायमान है कि जो दशा प्रायः वैसे और महद भगवदीयन को दुर्लभ है कि वैसी मृगनयनी रसिक सुंदरीन को हुं दुर्लभ है श्री बल्लभ प्रिय में ही निमग्न होयवे सुं श्री वीरबाई जी हू जाके स्वरूप कुं नहीं जाने है -- केवल प्राणनाथ जी ही जाके स्वरूप कुं जाने हैं ऐसी भली भाँति सुं सर्वोपर विराजमान वा दशा को निरख के वहाँ ठहर रहे जे वा श्री वीरबाई जी के स्वरूप को जानवे वारे श्रीमान माधवदास जी आदि भक्त हैं -- कि हरी भाई जी कि मेघ जी भाई कि जमुनादासजी कि देवजी भाई कि घनजी भाई कि कान्हाबाई कि पाखंडीबाई -- गोरबाई ब्राह्मणी कि कल्याण भट्ट में कि वैसे और हुं जे वे वे भक्त कि मृगनयना भक्त सुंदरी है श्री बल्लभ प्रिय में आशक्ति सुं या श्री वीरबाई जी में हु चिरपर्यंत अत्यन्त आशक्त मनवारे होय गये हैं ॥ याही अवसर में कोऊ भाग्यवान भक्त ने बधाई को नाद प्रगट करत कर सुनायो कि श्री प्राणनाथ

जी श्री नाथजी के मंदिर सुं बाहिर पधार के आवश्यक कृत्य हुं करे के चरण कमल हुं पखार के वैसे और और हू कृत्य करके अब फिर ही वा श्री नाथजी के मंदिर में पधारवे वारे हैं ॥ भाग्य वारे भक्त कि सगरी भक्त सुन्दरी हु या प्राणनाथ के श्री मुख चंद्रमा के सुधा समुद्रन को पान कर रहे हैं ॥ या भाग्यवान को जो महा पराक्रम वारो यह वचनरूप सुंदर अमृत है सो या श्री वीरबाई जी के कानों में प्रवेश करके बड़े जोर सुं ही या श्री वीरबाई जी को वैसी अवस्थावारी समाधी सुं वेग ही उठाय देतो भयो है ॥ प्राणनाथ के दर्शन अर्थ अत्यंत उत्कंठा वारो ही कर देतो भयो है ॥ तब सो श्री वीरबाई जी तथा और हुं मृगनयनी ब्रज सुन्दरी कि भक्तजन हु वहां ठहरे सगरे भक्त कि मैं हु वा सुंदर वर प्राणनाथ कुं निरखवे लिये वेग सुं ही दौड़े हैं -- अहो हम सब भक्त कि भक्त सुन्दरी हुं दौड़ रहे हते -- यह मार्ग साहस विशेष को ही है ॥ तासुं सो गुणवंती श्री वीरबायी जी तो साहस विशेष सुं हम सबन सुं ही आगे होय गयी है ॥ अहो जब तक हम हु सब वहाँ पहुँचे है तब सब रीति सुं दुर्लभ भगवान पुरुषोत्तमन के मुकुटमणि श्रीमद् गोकुल के सर्वस्व श्री प्राणनाथ जी श्री गिरधारी जी के मंदिर में ही प्रवेश कर गये हैं ॥ वहाँ तो कोऊ के प्रवेश को अवसर हु नहीं है ॥ तासुं वहाँ भीतर न जायके करोड़ान पद्मन नीधि हु जा पर वार डारे ऐसे प्रिय के परम फलरूप दर्शन को हम न पायके हम सब देवजी के घर प्रति पीछे बगदे हैं ॥ तब तो जिनको कोऊ ने सर्वस्व ही चोर लियो होय के जीव रहित जैसे होय वैसे ही अपनी बुद्धि बल की चतुरता की अपने की हुं वैसे वैसे निंदा करत ही ठहरे हैं ॥३९॥ दर्शन की लालच सुं पकरे कितने भक्त तो वहाँ श्री बैठक जी में ही ठहर गये हैं ॥ और हम तो सगरे देव जी के घर में प्रवेश करके ठहरे हैं ॥ तब तो श्री वीरबाई जी हु पीछे आय रही है ॥ रोम हर्ष सुं शोभायमान है कि कबहु जड़ होय जाय है कि हर्ष के आंसुन को वरसाय रही है कबहु तो कांपे है -- कबहुं पसीना सुं शोभायमान है ॥ कि स्वरूप को वर्ण बदल गयो है ॥ स्वर भंग सु शोभायमान है ॥ कबहु सुंदर मूर्छित होय जाय है ॥ श्री मुख कमल जाकुं प्रफुल्लित होय रह्यो है, श्री विग्रह तो अलौकिक महातेज सुं शोभायमान है ॥ सर्वोपर विराजमान कोऊ अनिर्वचनीय दशा चढ़ रही है, बड़े चतुरजन हु जाकुं पहिचान नहीं सके हैं -- मानो अमृतपान कर लियो

है -- करोड़ान निधि समुह मिल गये हैं -- कि कल्पवृक्ष के पके फलन को स्वाद विशेष जाने ले लियो है -- कि कामधेनु के दुग्धपान सुं अत्यन्त पुष्ट होय रही है ऐसी अत्यन्त प्रसन्न होय रही वीरबाई जी को हम सब देखके आश्चर्य रस को प्राप्त होय गये हैं ॥ कि अचंभे में आय गये हैं ॥४६॥ अहो खर्वन पद्मन प्राण जापर वार डारे ऐसे मनोहर स्वरूप प्रियवर को -- सगरे पुरुषार्थन सुं विशेष रूप दर्शन तो भयो नहीं है -- तांसुं सिद्ध होय रहे आपके विप्रयोग रूप अग्नि में सगरे हु भक्तजन वैसे वैसे तप्त ही होय रहे हैं कि शोक करे हैं कि श्वास भरे हैं कि या रीत सुं अपनी भयी असावधानी को सब प्रकार सुं निंदा ही कर रहे हैं कि बहुत प्रकार सुं स्वेद को प्राप्त होय रहे हैं -- कि सबन के मुख चंद्र अत्यन्त मलिन होय गये हैं तथा अधरपुट हु अत्यन्त सूख गये हैं -- उदासीन हो गये हैं कितने तो कादिशाक होय गये हैं -- कि कोई कितकुं कोई कितकुं चले गये हैं -- दुःख के आंसून को अत्यन्त वरसाय रहे हैं -- बड़े दृढ़ पश्चात्ताप को प्राप्य होय रहे -- अब का करनो यामें हु मूढ होय गये हैं -- विशेष सुं तो मृगनयनी सुंदरीजन तो अत्यन्त ही निर्जीव जैसे ही होय गयी है -- कि अत्यन्त ही दीन होय रही है विनमें हु सगरे भक्तन में हुं मुख्य गिनवे योग्य है गुणसागर जाके, ऐसी यह वीरबाई जी तो श्री प्राणनाथ जी के दर्शन सुं ही जीवे है -- आपके स्वरूप में ही अत्यन्त बाँधी है वा आपके रस सागर में ही निमग्न रहे हैं ऐसी होने पर हुं या प्रिय के दर्शन न होयवे रूप ऐसी महाविपदा में हुं यह कैसे प्रसन्न दीखे है -- अहो प्रिय के दर्शन न होयवे में आधो क्षण हु जाको कल्पशत जैसे दुःख देवे है वाको कैसो यह हर्ष होय रह्यौ है -- या प्रकार सुं हम तो सगरे ही सब रीत सो आश्चर्य सुं मिले हैं कि अचंभे में परे है तामे -- बड़ो विचारवान श्री माधवदास जी तो एकांत में भाव सुं पूछे है -- अयि भाग्यवती श्रीमती हम सबही प्रियवर प्राणनाथ के श्री मुखारिंद के निरखन रूप महानिधी को लेवे लिये ईहाँ सुं वेग ही दौड़े है तामें सर्वोपर विराजमान वैसे भाग्यन सुं रहित होयवे सुं अत्यन्त दुर्लभ सो निधि हमारे दृष्टिरूप हाथन में नहीं परयो है -- तब हम तो सब ही उदास होयके वहाँ सुं बड़े यत्न सुं पीछे बगदे हैं ॥ अयि भाग्यमृतां श्रेष्ठे -- अयि अंग महाप्रिये -- तुम तो भाग्यवारीन में श्रेष्ठ हो -- असंख्यात गुणन सुं मिली हो कि क्षण-क्षण में बढ़ रहे वा प्राणनाथ

को प्रिय जो प्रबल भाव है ता भाव सुं वा प्रिय की कृपा रस सागरन की पेटी रूप हो कि श्रृंगार रस के सर्वस्व रसरूप यंत्र सुं निकस रहे महामधुररस राजन के सुंदर समुहन सुं भीतर बाहीर भरी हो वा रस सुं ही भीतर बाहीर निरवकाश गढ़ी हो — कि गढ़ के बनायी हो — ऐसी तुमने — वा प्रियवर के श्री मुखारविंद को नैनन सुं निरख्यौ है का — कि वाके मकरंद महासागरन को पान कर लियो है का — कि संतापन को हरवे वारे वा श्री मुखारविंद के सौंदर्य अमृतन को नैनरूप अंजलीन सुं ले लेके बहुत वार चिरपर्यंत ही अपने तन मन को आज न्हवायो है का कि वा प्रिय के श्री मुखरूप क्षीर सागर सुं निकरे मनोहर वचन रूप चिंतामणिन सुं अपने कानों को अत्यन्त शोभायमान ही कियो है का — जासुं हम तो प्रिय के दर्शनादि को न पायके सब ही दुःखी उदास होय रहे हैं तुमको तो यह आनंद समूह भीतर कि बाहिर हु पसर रह्यो है तामें कारण का है — अहो तिहारो यह मुख अनंत कमलन सुं हुं विशेष कर प्रफुल्लित है तथा दर्पण को विलास को विजय करवे वारे तिहारे कपोल हुं अत्यन्त चमक रहे हैं — अयि तन्वी — कोमलांगी तिहारो श्री अंग हुं रोम हर्ष सुं शोभायमान है तथा यह तिहारो आनंद कि आंसुन को जो दीर्घ झरनो है सो बिना स्पर्श के ही हमारे सघन दोषरूप कीच को वेग ही धोय रह्यो है ॥७०॥ अपि कृपा सिंधो हमारे ऊपर प्रसन्न होयके अपने श्रीमुख रूप उदयाचल सुं उदय होय रहे. वचनामृत रूप सूर्य की किरणन सुं हमारे संशयरूप अंधकार समूह को वेग निकार के यामें जो तत्व होय कि हर्ष को मुख्य कारण होय सो हमारे आगे प्रगट करिये ॥ श्री कल्याण भट्ट जी आज्ञा करे हैं कि या प्रकार विनय पूर्वक श्री माधवदास जी ने विज्ञापना करी सो सुन्दर मुखवारी श्री वीरबाई जी एक क्षण ठहर के वाके प्रति आज्ञा करे है — कि तुम सवन को तथा औरन को हू उल्लंघन करि, हाँ तो वेग सुं ही दौड़ गयी हती तामें तब श्री प्रियजी तो श्रीनाथ जी के मंदिर में ही पधार गये हते — तब सुन्दर बड़े भाग्यवारी मैंने — श्री प्राणप्रिय जी के उपरना को चंचल अंचल ही निरख्यो है ॥ जो अंचल सौभाग्य समूह सो प्रकाशमान है ॥ कि श्रृंगार रस के सर्वस्व संपदा को जो घर रूप है ॥ कि सगरे मंगलन को जो निवासरूप है ॥ कि उज्वल अमृत के सागर जासुं झरे हैं ॥ कि सगरे सौंदर्यन को जो विश्राम घर है कि जाकी शोभा हू काम को विजय

करे है ॥ अनेक गुणन को जो गाम है ॥ कि अनुभव कि प्रभाव समूहन
सुं जो भयो है ऐसो सो उपरना को चंचल अंचल, बिना यत्न के ही मेरे
नैनन के ताप पर्वतन को हू चूर्ण कर देतो भयो है ॥ अयि मित्र वाने मेरे
नैनों में कोई अखंडित ही शीतलता भर दीनी है ॥ अहो जाके श्री मुखारविंद
की शोभा के आगे हजारन पूर्ण चन्द्रमा हू प्रकाश को अभिमान नहीं कर
सके हैं कि अपने को तृण जैसे मानवे में हू डरपे है ऐसे पूर्ण परमेश्वर श्रीगोकुलेश
जी को उपरना को अंचल मैंने दर्शन कर लियो है, अब बाकी का अभिलाषा
शेष है ॥ किंतु यामें सब ही आय गयी है ॥ अहो जा श्री गोकुलेश प्रभुन
के चरण कमल संबंधी रज को लेश हुं ब्रह्मादिकन को कि सगरे अवतारन
को कि सगरे अवतारीन को हू दुर्लभ है -- जो सर्वोपर ही बिराजमान है
ऐसे श्री गोकुलेश जी के उपरना के अंचल को निरख के कृतार्थ होय गयी
है ॥ कि हुं धन्य हुं ॥ प्राणप्रिय जी ने मेरे ऊपर बड़ी ही अनुग्रह करी है ॥
मेरे को अपनो उपरना, के अंचल को दिखाय के सर्वोपर विराजमान ही कर
दियो है ॥१॥ प्राणनाथ को उपरना को अंचल मेरे नयन द्वारा भीतर प्रवेश
करके मेरे हृदय में जा अपार अगाध आनंद के समुद्रन को बरसाय रह्यो
है ॥ विचार करत हू विन को संख्या तो हौं नहीं जानूं हुं कि कितने आनंद
के समुद्र हैं ॥ अहो अनेकान कामधेनु कि कल्पवृक्ष कि चिंतामणीन के समूह
हू नम्रता सहीत ही सदैव ही या उपरना के अंचल की अत्यन्त सेवा करे
है तथा पूर्ण पवित्रता कि ऐश्वर्य माधुर्य कि विलास तथा सौंदर्य की अतुल
कांती हू याकी दिन-रात्री ही उपासना करे है ॥ विशेष कहाँ लों कहे --
कि -- पुरुषोत्तमन के मुकुटमणी श्री गोकुलपती है सो हुं यामे निरंतर बिहार
करे है ॥८७॥ तथा वा प्रिय को मंद मुसकान पूर्वक जो देखनो है कि विलास
पूर्वक आलाप है -- अधर कि जो उछलित लालिमा है कि दंतन की जे लाल
किरण है कि तथा वा प्रिय के नयनन की जो चंचलता है कि सुन्दर कुंडलन
को जो तांडव है वैसे जुराके जे चमत्कार है कि मनोहर भ्रु के जे विलास
है उर्दपुंड्र की जो सुन्दरता है कि कपोलन की जो प्रफुल्लता है नयन कमल
की जो दीर्घता है कि चतुरता की कोमलता है नासा की वैसी उच्छल रही
सुन्दरता की श्वांसन की जो सुगंधी विशेष है कि कंठ की जो शोभा को
समूह है कि वामें विराज रहे सोना गुंजा मुक्ता फूलन के हारन की -- कि

तुलसी मालान की जे चित्रित माधुरी है तथा हृदय को जो ऊंचोपनो की विशालता है, आलिंगन की इच्छा को बढ़ायवेवारी भुज दंड की जो कोमलता है -- मुद्रिका संबंधी मणीन के जे शोभा समूह है कि उपरना की जो मनोहरता है कि उपवित जनेऊ की जो सुन्दरता है -- कि नाभीकूप की जो गंभीरता है कि चरण कमल की माधुरी के जे हजारन समुद्र हैं तथा मदभरे गजराज की गति को विजय करवे वारी जो कोऊ अलौकिक गति है तथा पुरुषोत्तमता हुं जामे निमग्न होय रही है -- ऐसो उच्छलित लौकिक शोभा वारो जो प्राणनाथ को सर्वोत्तम मनोहर मधुर श्रृंगार सार सर्वस्व रसरूप स्वरूप है -- यह सब ही या उपरना के अंचल में ही विहार कर रहे हैं ॥ वैसे शोभायमान हुं होय रहे हैं ॥ अहो जो उपरना को अंचल पवन के संबंध सुं जो चंचलता है वाको बहानो बनाय के प्राणनाथ के श्री अंग के आलिंगन सुं ही प्रगट भये हर्ष सुं ही नाच रह्यो है -- ऐसे वा अंचल को हम प्रणाम करे है ॥ अहो जो उपरना प्राणनाथ के आगे अपनी सुगंधी को भेंट करके तासुं प्रसन्न होयके प्राणनाथ ने दान किये अपने स्वरूप को प्राप्त होय रह्यो है ॥ कि याने तो राज के आगे अपने सुगंधी भेंट करी है ॥ प्रसन्न होयके राज ने अपनो स्वरूप याकुं दान कियो है तासुं तद्रूप होयके नाचे है यह भाव है ॥ अहो जा उपरना को स्पर्श तो कोमलता के समूह सुं भर्यो है ॥ प्राणनाथ के श्री अंग को सुखदायक है तथा सुंदर चमकतो रूप तो राज के नैनन को सुखदायक है ॥ सो ऐसी कौन चतुर सुंदरी है जो प्रिय के या उपरना के अंचल पर हुं अपने को तृण जानके हू बार डारे अपने को बारवे में हुं योग्यता नहीं है -- यह भाव है ॥१००॥ अहो जा उपरना को अंचल वा प्रिय के श्री अंग को शोभायमान करे है -- कि वो श्री अंग हू या अंचल को शोभायमान करे है ॥ तथा जो उपरना को अंचल वा शोभा सुं श्री प्राणनाथ के सगरे हू कृपापात्रन की दृष्टि को सब प्रकार सुं आनंदित करे है ॥ अहो जा अंचल की शोभा को वे ब्रज सुन्दरी जन तो टक-टकी लगाय के ही कंठ भर ही पान करे हैं ऐसे वा उपरना के अंचल की चरण कमल संबंधी रज के हर्ष समुद्रन में हौं तो अत्यन्त बिहार कर रही हुं ॥१०२॥ अहो मंद पवन के चलवे में वा अंचल ने जो नृत्य कियो है तासुं मेरे आगे तो वाने -- या नृत्य को मूल कारण तो प्राणनाथ के श्री अंग के आलिंगन को सुख ही है -- यह स्पष्ट ही कह्यो है ॥१०३॥ सो

विना कारण के बंधु मेरे ऊपर यदि प्रसन्न भयो है तो सो अंचल ही प्रसन्न होय ॥ अहो हों तो दर्शन के अर्थ ताती होयके आर्त होय के दौड़ रही हती पीछे आयी प्राणनाथ जी तो मेरी उपेक्षा करके वेग ही भीतर पधार ही गये ऐसी आर्त हुं मेरे ऊपर कृपा वारी होयके या उपरना के अंचल ने जो अपनो दर्शन करायो है कि अपने में प्राणनाथ जी को हुं दर्शन करायो है तासुं हौ हर्ष के समुद्रन में निमग्न होय रही हुं ॥ अहो जाने अपनो दर्शन कराय के महा दुर्लभ प्राणनाथ जी को हु मेरे कुं दर्शन कराय दियो है तासुं या उपरना के अंचल की हों तो दासी होय गयी हुं ॥ याकी रुणि हुं ॥ सदा की मोल बिकानी हुं ॥ तासुं आज याकी कृपा को समूह को विचार कर रही मेरे भीतर कि बाहिर बड़ो हुं अपार ही उच्छव बढ़ रह्यो है तासुं सबे सावधान होयके यह सुनो कि वेग ही करो कि आज वस्त्र छाने कोमल गेहुं के चून (मेदा) सुं सिद्ध कियो बरास मिसरी घृत सहित सुन्दर उत्तम कोमल स्वच्छ वे वे पकवान बनावो ॥ प्राणनाथ के भोग योग्य सब सामग्री वेग ही तैयार करो ॥ कि श्री प्राणनाथ के भोग अर्थ भोजन सिद्धि अर्थ रसोई घर में वा वा मनोहर अनेक सामग्री को पठावो तथा इहां हमारे घर में हुं वा प्राणनाथ के अर्थ वेग ही अनेक प्रकार के शाकादि सहित दही कि दूध कि शीखरनादि सू मनोहर प्राणनाथ को प्यारो भक्ष्य भोज्य चूष्य कि लेहय कि पेय सुं सुन्दर कि जलेवी कि बड़ा कि खीर आदि सहित सुन्दर पाक कियो चाहिये ॥ हमारे प्राणनाथ के सगरे भक्त कि स्त्रीजन हू बड़े उत्साह सुं गावे की नाचे — बड़ो उत्साह आनन्द करें — बड़े हर्ष सुं सबही ईहां महाप्रसाद हु लेवे ॥११५॥ और निर्दोष शुद्ध सफेद बहुत मिश्री हु ले आवो जाकुं प्रभुन को समर्प के प्रसादी बनाय के या समाचार के सुनवे सुं वा भक्तन के प्रफुल्लित होय रहे मुख कमलों में हर्ष सुं वाँट के भरुं ॥११७॥ कि कामधेनु चिंतामणी कल्पवृक्षन को हू विजय करवे वारे जा भक्तन के प्रबल दर्शन स्पर्श की कृपा, संभाषणादि संग सुं वेग ही यह फल मोकुं मिल्यो है ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि सो श्री सुन्दर मुखवारी श्री वीरबाई जी उछलित कृपा के समूह सो सबन के सुनत ही सुलतान पुरवासी श्री माधवदास जी के आगे इतनो प्रकार प्रगट करके फिर हू प्रियवर महाप्रभुन के स्वरूपात्मक रस सागर में निमग्न होय गयी है ॥१२०॥ इतने में श्री माधवदास जी आदि भक्तवर

तो वेग ही बहुत सफेद मिसरी लाये हैं ॥ तब तो सो श्री वीरबाई जी हुं
 वा प्रिय के स्वरूप रस सागर सुं बाहिर निकस के शुद्ध भाव के भार सुं
 खिंचे कि भाव सुं पधारे अपने श्री प्राणनाथ जी के आगे एकांत में सो समर्प
 के भोग धराय के प्रसादी वा मिसरी को बड़े हर्ष सुं हम सबन के कि भक्त
 सुंदरीन के हू मुखारविंद में अपने सुन्दर मनोहर हस्त कमल सुं ही भरे है ॥
 अहो वाके भाव भार सुं प्रसन्न भये श्री प्राणनाथ जी ने स्वयं हुं एकांत में
 पधार के सो मिसरी आरोगी है ॥ प्रसादी करी है तासुं सो मिसरी सबन
 कुं ही अत्यन्त रूची है ॥ कि देवतान को हुं दुर्लभ अमृत की वरषा करत
 भयी है यासुं हम सबन के ही हृदय में -- श्री प्राणनाथ के श्री मुख चंद्रमा
 के दर्शन की कोई अत्यन्त दुर्लभ मधुर ही ईच्छा अत्यन्त प्रगट भयी है ॥१२७॥
 या अवसर में ही श्री गिरिधारी जी को राजभोग सर रहयो हतो सो श्री प्राणप्रिय
 जी हू स्वयं श्री गिरिधारी जी के मंदिर सुं बाहिर अपनी बैठक जी में पधारवे
 कुं प्रारंभ करे है ॥ इतने में त्रिलोकी के तिलक प्रियवर श्री प्राणनाथ जी
 महाराज मंदिर सुं बाहिर पधारे है आगे उच्छलित भाव विशेष सुं भेंट को
 धरत भयी है ॥ तब रसिकन के नायक कृपा सागर सर्वज्ञ प्रियवर जी प्रसन्नता
 पूर्वक ही वा भेंट को अंगीकार करत भये हैं ॥ तथा अत्यन्त प्रफुल्लित श्री
 मुखारविंद सुं अक्षर-अक्षर में ही अमृत के समुद्रन को वरसावत ही पूछते हुं
 भये हैं कि ऐसे उच्छलित उत्साह सो यह ऐसी भेंट, का, कारण सुं होय
 रही है ॥ अत्यन्त गंभीरता सुं शोभायमान प्राणनाथ के अजाने जैसे या वचन
 को सुनकर सो अधिकारी रतन जी विज्ञापना करत भयो है -- "कि कृपासिंधो
 और सुं जो न जान्यो जाय कि केवल आप की यह श्री वीरबाई जी ही जाकू
 जाने ऐसो कोई याको गूढ़ ही मनोरथ आपने पूरण कियो है -- सो ही यामें
 कारण है -- यह जानो !" यह सुनके श्री प्राणनाथ भगवान श्रीजी कृपा दृष्टि
 सुं अमृत के समुद्रन को वरसावत ही मंद मुसकान सुं शोभायमान अधर पल्लव
 वारे होयके चुप ही होय जाते भये है ॥ तब या समय में श्री माधवदास जी
 आदि हू प्रेम प्रणाम पूर्वक राज के चरणन में भेंट कुं धरते भये हैं ॥ विनकुं
 हू सुन्दर कृपा दृष्टि सुं प्राणप्रभु जी अंगीकार करत भये हैं ॥ ता पाछे रसिकन
 के चक्रवर्ती भगवान हरी श्री प्राणनाथ जी भोजन घर में पधार के प्रसन्न
 मुखारविंद सो भोजन लीला को करत भये हैं ॥ तब सो श्री वीरबाई जी

कि हम् हू सब वा श्री वाई जी के वैसे सुन्दर घर में आये है ॥१४६॥ वहाँ तो रसभरी स्त्रीन के मुखरूप पूर्णचंद्र, चंद्रमान सुं अमृत की धारा समूह जैसे राज की रास बिहार सुं भरे अनेक प्रकार के गीत धौल श्री नारायण जी ने बनाये कि खंभातवासी श्री माधवदास जी ने बनाये कि श्री मावजी भट्ट ने बनाये चारो ओर ही उदय होते भये हैं ॥ अहो कानों में अतिथि रूप सुं प्राप्त होय रहे कि सुनवे में आय रहे अनेक प्रकार के सुन्दर वा गीतन सुं प्राणप्रभु के वैसे भाग्यभरे सगरे हू भक्तन की मंडली सिंचित करी की न्हवायी कि आर्द्र करी अत्यन्त ही पखारी अत्यन्त ही उज्ज्वल होय जाती भयी है ॥ तब तो सबन के हृदय में ही निमर्याद उत्साह को सागर ही उछल्यो है ॥१५२॥ तब वा श्री बीरवाई जी के वैसे प्रौढ़ भाव सुं आकर्षण कियो सो मनोहर भगवान प्रभु श्री प्राणनाथ जी एकांत में छिप के वहाँ पधार के सगरी सामग्री को आरोगते भये हैं ॥ जो लों रस सागर श्री प्राणनाथ जी भूमि सेज्या पर बिराजे है तो लों आपके प्रसादी वा महाप्रसाद को सगरे हुं भक्तजन उछलित प्रेम आदर समूह सुं बड़े हर्ष सुं लेते भये हैं ॥ फिर लवंग इलायची आदि मुखवास हुं लेते भये है ॥१५४॥ प्राणनाथ के अनेक प्रकार के गीत हू प्रगट भये हैं ॥ श्री प्राणनाथ के सुन्दर गुणन सुं भरी वैसी कथा हुं अनेक प्रकार भयी है ॥ या अवसर में विश्राम कर श्री प्राणनाथ जी उठके अपने आसन गादी तकिया को शोभायमान करत भये हैं ॥१५६॥ तब सुन्दर भाव सुं भरे अंतःकरण वारी भाग्यवती वा श्री वीरवाई जी को मुख आगे करके हम सब ही वहां श्री राज की श्री बैठक जी में चले हैं ॥ वहां जाय के हम सब ही श्री प्राणनाथ जी के प्यारे श्री मुख चंद्रमा के अपार गंभीर सुन्दर मनोहर मधुर अमृत के सागर में निमग्न ही होय गये हैं ॥१५८॥

॥ इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ निभृत रसविहारमये त्रयोदशे कल्लोले पंचदश स्तरंगः ॥१५॥